Class - B.Com XII

Subject - EPS

Title - Nature of Planning

Lecture - 13

Prepared by - Dr C P Sahu

Marwari College DBG.

नियोजन की प्रकृति - (1)

नियोजन के परिभाषाओं एवं अवधारणा के अध्ययन करने के बाद हमें नियोजन के प्रकृति, लक्षण एवं विशेषताओं पर भी ध्यान होना चाहिए। लक्षण तथा प्रकृति निम्नलिखित है -

(1) निर्धारित लक्ष्य एवं उद्देश्य का होना - प्रत्येक नियोजक इस लक्ष्य को हमेशा ध्यान में रखता है और उसी के अनुसार अपना योजनाएँ बनाता है।

(2) ऐक्यता - एक समय में केवल एक योजना ही कार्यान्वित की जा सकती है क्योंकि दो तरह की योजना बनाने में भ्रम एवं अव्यवस्था फैलती है।

(3) पूर्वानुमान - नियोजन विभिन्न प्रकार के पूर्वानुमानों का, चाहे वे अल्पकालीन हों अथवा दीर्घकालीन, सामान्य हो अथवा विशिष्ट विश्लेषण होता है।

(4) नियोजन की सर्वव्यापकता - कोई व्यक्ति चाहे कंपनी का अध्यक्ष हो अथवा फोरमैन - संगठन के प्रत्येक स्तर पर नियोजन की आवश्यकता पड़ती है।

(5) पारस्परिक निर्भरता - नियोजन पारस्परिक निर्भरता का होना चाहिए। एक उद्योग के कार्यक्रम को कई विभागों में विभाजित किया जाता है। जैसे - उत्पादन विभाग, क्रय विभाग, विक्रय विभाग एवं सेविवर्गीय विभाग।

(6) प्राथमिक कार्य - किसी भी प्रबन्धकीय प्रक्रिया में नियोजन को प्रमुख स्थान होता है। संस्था का लक्ष्य, जिसकी पूर्ति के लिए प्रबन्धकीय प्रक्रिया सम्पन्न होती है।

(7) मानसिक क्रिया - नियोजन बौद्धिक एवं मानसिक प्रक्रिया है क्योंकि योजना बनाने वालों को सम्भावित कार्य विधियों एवं विकल्पों का चयन करना पड़ता है।

Scanned with CamScanner

यह कार्य दूरदर्शिता, विवेक, चिन्तन पर निर्भर करता है। (2) क्योंकि नियोजन एक बौद्धिक प्रक्रिया है जिसके लिए सृजनात्मक चिन्तन एवं कल्पना की आवश्यकता होती है।

उपर्युक्त लक्षण के अतिरिक्त और भी लक्षण अन्य हैं — (i) नियोजन का निर्धारण (ii) वैकल्पिक क्रियाओं का सर्वश्रेष्ठ चयन (iii) नियोजन में समय (iv) मार्गदर्शक का कार्य करना (v) प्रबन्धकों की कार्य कुशलता (vi) निश्चित एवं सीमित साधनों पर भी विशेषरूप से ध्यान दिया जाता है।

नियोजन के उद्देश्य :—

(1) पूर्वानुमान लगाना – पूर्वानुमान नियोजन का सार है नियोजन का उद्देश्य भविष्य के संबंध में पूर्वानुमान लगाना है।

(2) निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति – नियोजन का उद्देश्य निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास करना रहता है।

(3) स्वस्थ मोर्चाबन्दी – नियोजन के माध्यम से स्वस्थ मोर्चाबन्दी को विकसित करता है।

(4) भावी कार्यों में निश्चितता – इसके माध्यम से संस्था के भावी गतिविधियों में अनिश्चितता के स्थान पर निश्चितता लाने का प्रयास किया जाता है।

(5) निश्चित दिशा प्रदान करना – नियोजन के द्वारा भावी रूपरेखा बनाकर एक विशेष दिशा प्रदान करने का प्रयास किया जाता है।

(6) प्रबन्ध में मितव्ययिता – भावी गतिविधियों की योजना के बन जाने से प्रबन्ध का ध्यान उसे कार्यान्वित की ओर केन्द्रित हो जाता है।

(7) समन्वय की स्थापना – नियोजन के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों में साम्य एवं समन्वय स्थापित किया जाता है।

(8) अन्य उद्देश्य – (i) प्रतिस्पर्धा पर विजय पाना (ii) कुशलता में वृद्धि करना (iii) जानकारी देना (iv) इत्यादि।

Scanned with CamScanner